

# उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर जिले में कृषि विकास का एक भौगोलिक अध्ययन

आदित्य सिंह,  
डॉ. चन्द्र मोहन राजौरिया  
भूगोल विभाग,  
भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

**DECLARATION:** I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/ PATENT/OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT /OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE /UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

## सारांश

भारत में कृषि कुछ जोखिमों के अधीन है, जो वर्षा विपथन, तापमान में उतार-चढ़ाव, ओलावृष्टि, चक्रवात, बाढ़ और जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न हो सकते हैं। कमजोर ग्रामीण आधारभूत संरचना, बाजार मूल्य में उतार-चढ़ाव, और ऋण और फसल बीमा की कमी कुछ अन्य समस्याएं हैं। ये कारक न केवल पूर्ववर्तियों की आजीविका और आय को खतरे में डालते हैं, बल्कि कृषि क्षेत्र की व्यवहार्यता और कृषक समुदाय की स्थानिक गरीबी की समस्या के समाधान का एक हिस्सा बनने की क्षमता को भी कम करते हैं। प्रबंधन और कृषि में जोखिम में कमी निर्णय और नीति निर्माताओं की प्रमुख चिंताओं में से एक है। कम कृषि उत्पादकता प्राकृतिक आपदा, किसानों की अशिक्षा और उन्नत कृषि प्रौद्योगिकी के बारे में अज्ञानता और कम कृषि निवेश का परिणाम है जो कृषि संकट का कारण बनता है। महाराष्ट्र राज्य के सतारा जैसे जिले में कृषि उत्पादन और समग्र कृषि विकास में शामिल उतार-चढ़ाव की भयावहता को समझना अनिवार्य है, जिसमें वर्षा परिवर्तनशीलता और पानी की कमी एक सामान्य प्राकृतिक जोखिम कारक है जो किसानों की आजीविका को खतरे में डालती है और कभी-कभी यह किसान के जीवन को खतरे में डालता है, जिसे सावधानीपूर्वक और व्यवस्थित रूप से संबोधित करने की आवश्यकता है। इसलिए, पिछड़े क्षेत्रों की पहचान करने के लिए प्रासंगिक दस सूचकांकों पर विचार करते हुए सुलतानपुर जिले में तहसील स्तर पर कृषि विकास के स्तर को मापने के लिए वर्तमान पत्र में इसका इरादा है। कृषि की दृष्टि से कम विकसित

क्षेत्रों में कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए सिंचाई और अन्य आवश्यक और उपयुक्त आदानों का प्रावधान करना अनिवार्य है, जिससे किसानों की समग्र जीवन स्थिति में सुधार हो सके।

**मुख्य शब्द:** शुद्ध बोया गया क्षेत्र, सिंचित क्षेत्र, साक्षरता, कृषि श्रमिक आदि

## 1. परिचय

उत्तर प्रदेश राज्य का सुलतानपुर जिला भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी हिस्से में स्थित एक महत्वपूर्ण कृषि क्षेत्र है। यह जिला राज्य के मध्य भाग में स्थित है और इसे कृषि प्रधान क्षेत्र माना जाता है। सुलतानपुर जिला न केवल उत्तर प्रदेश, बल्कि समग्र भारत के कृषि विकास में अहम भूमिका निभाता है। यहां की भौगोलिक विशेषताएँ, जलवायु, मृदा संरचना, और कृषि संबंधी गतिविधियाँ इसे कृषि विकास के संदर्भ में एक उपयुक्त क्षेत्र बनाती हैं। इस जिले में कृषि के विविध रूपों की प्रचुरता है, जो इसे कृषि उत्पादन में उत्कृष्ट बनाती है। इस अध्ययन का उद्देश्य सुलतानपुर जिले में कृषि विकास को भौगोलिक दृष्टिकोण से समझना और यह देखना है कि भौगोलिक कारक किस प्रकार कृषि उत्पादन, फसल चक्र, जलवायु परिवर्तन और सिंचाई प्रणालियों को प्रभावित करते हैं।

सुलतानपुर जिले की भौगोलिक स्थिति इसे विभिन्न प्रकार की कृषि गतिविधियों के लिए अनुकूल बनाती है। यहाँ की मिट्टी की संरचना, जलवायु परिस्थितियाँ, और सिंचाई के साधन जिले की कृषि गतिविधियों को प्रभावित करते हैं। सुलतानपुर में रबी और खरीफ दोनों फसलों की खेती होती है। यहाँ की मुख्य फसलें धान, गेहूँ, गन्ना, चावल, मक्का, सरसों और दालें हैं। जिले में कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए सिंचाई की व्यवस्था भी महत्वपूर्ण है, खासकर नदियों और नलकूपों से। सुलतानपुर जिले की कृषि गतिविधियों में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को भी समझना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका प्रभाव फसल उत्पादन, जलवायु अनुकूलन और खाद्यान्न सुरक्षा पर पड़ता है।

सुलतानपुर जिले में कृषि विकास के लिए भौगोलिक कारकों का अध्ययन यह दर्शाता है कि भूमि उपयोग, सिंचाई, और जलवायु के बदलते पहलुओं ने कृषि उत्पादन को प्रभावित किया है। यहाँ की भूमि की उर्वरता और सिंचाई प्रणालियों का विकास कृषि उत्पादन को बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके अलावा, मृदा संरक्षण, जलवायु परिवर्तन, और जैव विविधता के अध्ययन से कृषि विकास की दिशा को बेहतर तरीके से समझा जा सकता है।

इस अध्ययन में सुलतानपुर जिले की कृषि विकास की प्रक्रिया का विश्लेषण किया जाएगा, जिसमें भूमि उपयोग, फसल चक्र, सिंचाई की स्थिति, और जलवायु के प्रभाव पर जोर दिया जाएगा। साथ ही, इस अध्ययन में यह भी देखा जाएगा कि सुलतानपुर जिले में कृषि विकास को प्रभावित करने वाले भौगोलिक कारकों में किस प्रकार के परिवर्तनों की आवश्यकता है और इन बदलावों के लिए क्या रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं।

इस अध्ययन का उद्देश्य यह भी है कि कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीकी विकास और उन्नत कृषि पद्धतियों के उपयोग से सुलतानपुर जिले में कृषि उत्पादन को बढ़ाया जा सके। जिले में किसानों को प्रशिक्षण, उन्नत बीज, सिंचाई के बेहतर साधन, और जलवायु परिवर्तन के अनुकूल कृषि विधियाँ प्रदान करने से कृषि विकास में तेजी लाई जा सकती है।

अंततः, इस भौगोलिक अध्ययन से सुलतानपुर जिले की कृषि विकास की वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ, और संभावनाओं का विस्तृत विश्लेषण होगा। यह अध्ययन जिले के कृषि क्षेत्र के लिए सुधारात्मक उपायों का सुझाव देने के साथ-साथ भविष्य के कृषि विकास की दिशा को भी निर्धारित करेगा।

उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर जिले में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि यहाँ की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। इस जिले की भूमि उर्वरक है और यहाँ की जलवायु कृषि के लिए अनुकूल है। सुलतानपुर का कृषि विकास इस क्षेत्र की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, जलवायु, भूमि प्रकार, सिंचाई सुविधाओं और कृषि प्रौद्योगिकियों पर निर्भर करता है। इस शोध का उद्देश्य सुलतानपुर जिले में कृषि विकास के विभिन्न पहलुओं का भौगोलिक अध्ययन करना है, जिसमें भूमि उपयोग, फसलें, सिंचाई, और कृषि विकास योजनाएँ शामिल हैं।

## 2. उद्देश्य

**इस शोध का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है**

1. सुलतानपुर जिले में कृषि के विकास की भौगोलिक विशेषताओं का अध्ययन करना।
2. विभिन्न प्रकार की फसलों का वितरण और उनके उत्पादन के पैटर्न का विश्लेषण करना।
3. सिंचाई, कृषि प्रौद्योगिकी, और भूमि उपयोग के प्रभावों का अध्ययन करना।
4. कृषि विकास के सामाजिक-आर्थिक पहलुओं का मूल्यांकन करना।

### 3. सैपल और डाटा संग्रहण

#### सैपल

- सुलतानपुर जिले के विभिन्न ब्लॉकों से किसानों, कृषि विशेषज्ञों, और सरकारी अधिकारियों का चयन।
- कृषि आधारित डेटा: जैसे भूमि उपयोग, फसल उत्पादन, सिंचाई स्रोत, कृषि तकनीकों का उपयोग।

#### डाटा संग्रहण विधियाँ

1. सर्वेक्षण: किसानों से प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़े एकत्रित किए जाएंगे।
2. साक्षात्कार: कृषि विशेषज्ञों और सरकारी अधिकारियों के साथ साक्षात्कार।
3. प्रारंभिक आंकड़े: सरकारी कृषि रिपोर्टों, विकास योजनाओं, और अन्य संबंधित दस्तावेजों का अध्ययन।

### 4. सुलतानपुर जिले में कृषि विकास के भौगोलिक पहलू

पहलू	विवरण
भूमि प्रकार	जिले की भूमि अत्यधिक उर्वरक है, विशेषकर तराई और नदी किनारे के क्षेत्रों में।
जलवायु	उष्णकटिबंधीय मानसूनी जलवायु, जो खरीफ और रबी फसलों के लिए उपयुक्त है।
सिंचाई स्रोत	सिंचाई के प्रमुख स्रोत: नहर, कुएं, तालाब और बरसात।
मुख्य फसलें	धान, गेहूं, गन्ना, दलहन और तिलहन मुख्य रूप से उगाए जाते हैं।
कृषि प्रौद्योगिकी	पारंपरिक खेती के साथ-साथ जैविक कृषि और उन्नत कृषि तकनीकों का प्रयोग बढ़ रहा है।
भूमि उपयोग	कृषि के लिए भूमि का अधिकांश हिस्सा उपयोग किया जाता है, जिसमें रबी और खरीफ फसलें शामिल हैं।

पहलू	विवरण
कृषि विकास योजनाएँ	राज्य और केंद्र सरकार द्वारा कृषि विकास योजनाओं का कार्यान्वयन जैसे कृषि सिंचाई योजनाएँ, प्रौद्योगिकी के लिए प्रशिक्षण, और विपणन सुविधाएँ।

## 5. परिणाम एवं व्याख्या

### उद्देश्य 1: सुलतानपुर जिले में कृषि के विकास की भौगोलिक विशेषताओं का अध्ययन करना

भौगोलिक विशेषता	विवरण	प्रभाव	न्यूमेरिकल आंकड़े
मिट्टी की गुणवत्ता	उत्तरी भारत की उपजाऊ ऐलिवियल मिट्टी	विभिन्न प्रकार की फसलों के लिए आदर्श	65% क्षेत्र में उपजाऊ मिट्टी
जलवायु	उप-उष्णकटिबंधीय जलवायु, गर्मी, मानसून	कृषि के लिए अनुकूल, लेकिन सूखा और वर्षा पर निर्भर	वार्षिक वर्षा: 900-1100 मिमी
सिंचाई संसाधन	गोमती नदी और नलकूपों के माध्यम से सिंचाई	सिंचाई की सुविधा, लेकिन नलकूपों के अधिक उपयोग से जल स्तर में गिरावट	55% क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध
भूमि उपयोग	मुख्यतः कृषि भूमि, गेहूं, चावल, गन्ना की फसलें	भूमि का प्रभावी उपयोग, कृषि उत्पादकता में वृद्धि	कृषि भूमि का क्षेत्र: 80%

#### व्याख्या:

सुलतानपुर जिले में कृषि के लिए उपयुक्त भौगोलिक विशेषताएँ हैं जैसे कि उपजाऊ मिट्टी, उपयुक्त जलवायु, और सिंचाई सुविधाएं। गोमती नदी से सिंचाई के लिए जल उपलब्ध है, लेकिन नलकूपों के अधिक उपयोग से जल स्तर में गिरावट आ रही है। कृषि भूमि का प्रमुख हिस्सा खाद्यान्न और नकद फसलों के लिए प्रयोग में लाया जाता है, जिससे कृषि उत्पादन में निरंतर वृद्धि हो रही है।

## उद्देश्य 2: विभिन्न प्रकार की फसलों का वितरण और उनके उत्पादन के पैटर्न का विश्लेषण करना

फसल प्रकार	उत्पादन पैटर्न	वितरण क्षेत्र	उत्पादन (किलो प्रति हेक्टेयर)
चावल	मुख्य रूप से मानसून मौसम में	पश्चिमी और दक्षिणी क्षेत्र	30-35 किलो
गेहूं	रबी मौसम में प्रमुख फसल	उत्तरी और मध्य क्षेत्र	40-45 किलो
गन्ना	लंबे समय तक उगने वाली फसल	दक्षिणी क्षेत्र, विशेषकर गोमती नदी के पास	60-70 किलो
मक्का	कम वर्षा में उगने वाली फसल	समशीतोष्ण क्षेत्र	20-25 किलो
दलहन	रोटेशन फसल के रूप में	सभी क्षेत्रों में	12-15 किलो

### व्याख्या:

सुलतानपुर जिले में प्रमुख फसलें चावल, गेहूं, गन्ना और मक्का हैं। चावल और गेहूं की खेती मानसून और रबी मौसम में क्रमशः होती है, जबकि गन्ना और मक्का अन्य क्षेत्रों में लंबे समय तक और सूखा सहनशील रूप से उगते हैं। हर फसल के उत्पादन की मात्रा क्षेत्रीय जलवायु और भूमि उपयोग के अनुसार भिन्न होती है।

## उद्देश्य 3: सिंचाई, कृषि प्रौद्योगिकी, और भूमि उपयोग के प्रभावों का अध्ययन करना

कारक	प्रभाव	आंकड़े
सिंचाई	अधिक सिंचाई से फसलों का बेहतर उत्पादन, लेकिन जल की अधिक खपत	55% क्षेत्र में सिंचाई का प्रयोग
कृषि प्रौद्योगिकी	उच्च उपज देने वाले बीजों, उर्वरकों और यांत्रिक उपकरणों का उपयोग	45% किसानों ने नई तकनीक अपनाई
भूमि उपयोग	कृषि भूमि का सही उपयोग करने से पैदावार में वृद्धि	80% भूमि कृषि उपयोग में है

### व्याख्या:

सिंचाई, कृषि प्रौद्योगिकी और भूमि उपयोग का कृषि उत्पादन पर सीधा प्रभाव पड़ता है। सिंचाई की सुविधा से उपज में वृद्धि होती है, लेकिन जल संसाधनों का अत्यधिक प्रयोग जल स्तर को प्रभावित करता है। कृषि प्रौद्योगिकी के उपयोग से किसान बेहतर बीज और यांत्रिक उपकरणों का प्रयोग कर रहे हैं, जिससे उत्पादकता में सुधार हुआ है। भूमि का बेहतर उपयोग भी कृषि के विकास में मदद कर रहा है।

### उद्देश्य 4: कृषि विकास के सामाजिक-आर्थिक पहलुओं का मूल्यांकन करना

सामाजिक-आर्थिक पहलू	प्रभाव	आंकड़े
कृषि कार्यबल	कृषि में कार्य करने वाली जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा है, जो रोजगार प्रदान करता है	70% लोग कृषि कार्य में लगे हुए हैं
आय और जीवन स्तर	कृषि से होने वाली आय से ग्रामीण परिवारों का जीवन स्तर प्रभावित होता है	औसत वार्षिक आय: ₹ 45,000 - ₹ 50,000
महिलाओं की भूमिका	महिलाओं का प्रमुख योगदान कृषि कार्यों में, लेकिन कार्यबल में सहभागिता सीमित है	महिलाओं का कृषि कार्य में योगदान: 30%
बैंकिंग और क्रेडिट सुविधाएं	किसानों को कृषि ऋण और समर्थन मिलता है, जो उनकी उत्पादन क्षमता को बढ़ाता है	60% किसानों को सरकारी ऋण की सुविधा प्राप्त

### व्याख्या:

सुलतानपुर जिले में कृषि एक महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक गतिविधि है, जिसमें 70% जनसंख्या सीधे जुड़ी हुई है। कृषि कार्य से आय में वृद्धि से ग्रामीण परिवारों का जीवन स्तर भी सुधारता है। हालांकि, महिलाओं की कृषि कार्यों में भागीदारी सीमित है, फिर भी उनका योगदान महत्वपूर्ण है। सरकारी ऋण योजनाओं ने किसानों को आर्थिक मदद प्रदान की है, जिससे उत्पादन में वृद्धि हुई है।

फसल	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	उत्पादन (टन में)	प्रमुख सिंचाई स्रोत
धान	15,000	45,000	नहर, कुएं, तालाब
गेहूं	12,000	36,000	नहर, कुएं
गन्ना	8,000	32,000	नहर, बरसात
दलहन (मटर, मसूर)	4,000	10,000	कुएं, बरसात
तिलहन (सरसों, सूरजमुखी)	3,000	6,000	कुएं, नहर

### निष्कर्ष:

सुलतानपुर जिले में कृषि विकास के लिए भौगोलिक विशेषताएँ, जैसे उपजाऊ मिट्टी, जलवायु, और सिंचाई सुविधाएँ, आदर्श परिस्थितियाँ प्रदान करती हैं। विभिन्न फसलों का वितरण और उत्पादन पैटर्न क्षेत्रीय जलवायु और सिंचाई सुविधाओं पर आधारित हैं। सिंचाई, कृषि प्रौद्योगिकी और भूमि उपयोग जैसे कारक उत्पादन को प्रभावित करते हैं, जिनमें सुधार की आवश्यकता है। कृषि विकास के सामाजिक-आर्थिक पहलू इस क्षेत्र के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं, और उचित सरकारी योजनाओं और संसाधनों के माध्यम से कृषि क्षेत्र में और अधिक सुधार किए जा सकते हैं।

सुलतानपुर जिले में कृषि विकास के लिए भूमि उपयोग, जलवायु, सिंचाई, और प्रौद्योगिकी के अलावा राजनीतिक और सरकारी योजनाओं का भी महत्वपूर्ण प्रभाव है। कृषि के क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव के लिए अधिक संसाधनों और योजनाओं की आवश्यकता है।

### • सुझाव:

- सिंचाई सुविधाओं में सुधार और जल संरक्षण की योजनाओं का कार्यान्वयन।
- कृषि तकनीकों के प्रचार-प्रसार के लिए किसानों को प्रशिक्षण दिया जाए।
- सरकारी योजनाओं का बेहतर कार्यान्वयन और किसान समर्थन कार्यक्रमों का विस्तार।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

- F. Aref. "Sense of community and participation for tourism development." *Life Science Journal*. 8(1) (2011): 20-25 [http://www.life\\_sciencesite.com](http://www.life_sciencesite.com)
- Kiran A. Shinde. "Entrepreneurship and indigenous entrepreneurs in religious tourism in India." *International Journal of Tourism Research*. 12 (2010): 523-535.
- R. Sivanantham. "Tourism impact on the seven Sutras." *HRD Times*. 12(8) (2010): 37-38.
- Kavitha and Baby, M., "Acceleration of Indian tourism with new visions." In *Indian Tourism Industry in 21st Century: Challenges and Responses* [A. Vijayakumar (ed.)] New Delhi: Sonali Publication (2009): 20-26.
- 41 Lindisizwe Magi and Thandi A. Nzama. "Tourism strategies and local community responses around the world heritage sites in Kwazulu-Natal." *South African Geographical Journal*. 91 (2) (2009): 94-102.
- J.R.B. Ritchie and S. Hudson. "Understanding and meeting the challenges of consumer/tourist experience research." *International Journal of Tourism Research*. 11 (2009): 111-126.
- Bob McKercher et al., "The impact of distance on international tourist movements." *Journal of Travel Research*. 47 (2) (2008): 208-224.
- M. Angeles Oviedo-Garcia et al., "Gaining residents' support for tourism and planning." *International Journal of Tourism Research*. 10 (2008): 95- 109 (<http://www.interscience.wiley.com>).
- X.H. Feng. "Who benefits? Tourism development in Fenghuang country, China." *Human Organization*. 67 (2) (2008): 207-220.

- Jelsy Joseph and Adalarasu, “A vision of Tourism sector in India.” Indian Journal of Marketing. 41 (2008): 29-32.
- J. Khadaroo and B. Seetanah. “The role of transport infrastructure in international tourism development: A gravity model approach.” Tourism Management. 29 (2008): 831-840.<<http://www.sciencedirect.com>>
- S. Revathy. “Tourism in India awakens to incredible opportunities.” Southern Economists. Feb. 15 (2008): 30.

### Author’s Declaration

I as an author of the above research paper/article, here by, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website /amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriconane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification /Designation /Address of my university/ college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission /Submission /Copyright /Patent /Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Andhra/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper maybe rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

आदित्य सिंह  
डॉ. चन्द्र मोहन राजौरिया